पाठ का उद्देश्य

बहू की विदा दहेज प्रथा की कुरीति के विरोध में लिखी गई रचना है।जीवनलाल अपनी बहू की विदाई के लिए पाँच हज़ार रूपयों की माँग करते हैं।बहू के भाई प्रमोद द्वारा यह रकम नहीं दिए जा सकने के कारण जीवनलाल बहू की विदाई कराने से इंकार कर देते हैं।अंत में जीवनलाल की खुद की बेटी जब दहेज के कारण विदा नहीं होती तो उनकी आँखें खुल जाती हैं। वे कहते हैं कि भले ही जीवनभर की कमाई दे दो लेकिन लड़के वालों की माँगें पूरी नहीं होतीं।जीवनलाल का हृदय परिवर्तन ही इस कहानी की उपलब्धि है।